Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ
وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا

(सूरः बनी-इसराईल **:106)**

अनुवाद : और हमने हक़ के साथ उसे उतारा है और ज़रूरत--ए-हुक़्क़ा के साथ यह उतरा है। और हमने तुझे नहीं भेजा परंतु एक खुशखबरी देने वाले और एक सचेत करने वाले के तौर पर।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक 16

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

08 शवाल 1445 हिज्री कमरी, 18 शहादत 1403 हिज्री शम्सी, 18 अप्रैल 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

नमाज़ में सफ़ें सीधी रखनी चाहिए

हज़रत नुमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे तुम्हें अपनी सफ़ें सीधी रखनी चाहिए अन्यथा अल्लाह तआला (नतीजा के तौर पर) तुम्हारे चेहरों और तुम्हारे दिलों में इख़तेलाफ़ का बीज डाल देगा।

(बुख़ारी किताबुस सलात बाब तसफ़ीया सफ़ूफ़)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। तुम सफ़ें सीधी बाँधा करो क्योंकि सफ़ों को सीधा रखना भी नमाज़ की तकमील का एक हिस्सा है।

(बुख़ारी, किताबुल् अस्सलात, बाब तसफ़ीया सफ़ूफ़)

बाजमाअत नमाज़ में इमाम अस्सलात से पहले सिर उठाना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स तुम में से नमाज़ के ईमाम से पहले सिर उठा लेता है वह इस बात से नहीं डरता कि अल्लाह तआला उसके सिर को गधे के सिर की तरह बनादे। या फ़रमाया। उसकी शक्ल गधे की सी बनादे ।अर्थात ऐसे शख़्स से समझ और अक़्ल छीन लेगा।

(मुस्लिम किताबुल् सलात)

★ ★ ★

अपनी हिम्मत और कोशिश पर भरोसा मत करो और मत समझो कि यह सफलता हमारी किसी योग्यता और मेहनत का परिणाम है

बल्कि यह सोचो कि उस रहीम ख़ुदा ने जो कभी किसी की सच्ची मेहनत को ज़ाए नहीं करता है, हमारी मेहनत को फलदार किया

मेरा ईमान यही है कि अगर इन्सान दुनिया में हर किस्म की ज़िल्लत और सख़्ती से बचना चाहे तो उसके लिए एक ही राह है कि मुत्तक़ी बन जाए

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

संसारिक कामयाबियां और ख़ुशियां दाइमी नहीं

इन्सान को हर किस्म की सफलता के अवसर पर एक ख़ुशी होती है। क़ुरआन शरीफ़ से तीन किस्म की ख़ुशियां, लहू, लाअब, तफाख़ुर मालूम होती हैं। लहू में खाने पीने की वस्तुए शामिल हैं और लअब में शादी इत्यादि की ख़ुशियां और तफ़ाख़ुर में माल इत्यादि की ख़ुशियां। ये तीन किस्म की ख़ुशियां हैं इन से बाहर कोई ख़ुशी नहीं है। परंतु याद रखो कि कामयाबियां और यह ख़ुशियां दाइमी नहीं होती हैं बल्कि उनके साथ दिल लगाओ गे तो सख़्त हर्ज होगा और रफ़्ता-रफ़्ता एक वक़्त आता जाता है कि इन ख़ुशियों का ज़माना तल्ख़ियों से बदलने लगता है।

दुनिया की कामयाबियां इबतेला से ख़ाली नहीं होती हैं। क़ुरआन शरीफ़ में आया है خَلَقَ الۡمَوۡتَ وَالۡحَیٰوۃَ لِیَبۡلُوَکُمۡ (अल् मुल्क : 3) अर्थात मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि हम तुम्हें आज़माए। सफलता और नाकामी भी ज़िंदगी और मौत का सवाल होता है। सफलता एक किस्म की ज़िंदगी होती है। जब किसी को अपने कामयाब होने की ख़बर पहुँचती है तो इस में जान पड़ जाती है और गोया नई ज़िंदगी मिलती है और अगर नाकामी की ख़बर आजाए तो ज़िंदा ही मर जाता है और बसा-औक़ात बहुत से कमज़ोर दिल आदमी हलाक भी हो जाते हैं।

यह बात भी याद रखनी चाहिए कि आम ज़िंदगी और मौत तो एक आसान बात है लेकिन जहन्नुमी ज़िंदगी और मौत दुशवार तरीन चीज़ है। नेक आदमी नाकामी के बाद कामयाब हो कर और भी नेक हो जाता है और ख़ुदा तआला पर ईमान बढ़ जाता है। उस को एक मज़ा आता है जब वह ग़ौर करता है कि मेरा ख़ुदा कैसा है। और दुनिया की सफलता ख़ुदा शनासी का एक बहाना हो जाता है। ऐसे आदमियों के लिए यह संसारिक कामयाबियां हक़ीक़ी सफलता का (जिसको इस्लाम की इस्तिलाह में फ़लाह कहते हैं) एक ज़रीया हो जाती हैं। मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि सच्ची ख़ुशहाली, सच्ची राहत-ए-दुनिया और दुनिया की चीज़ों में हरगिज़ नहीं है। हक़ीक़त यही है कि दुनिया के समस्त शोबे देखकर भी इन्सान सच्चा और दायमी आनंद हासिल नहीं कर सकता। तुम देखते हो कि दौलतमंद ज़्यादा माल व दोलत रखने वाले हर वक़त ख़ुश रहते हैं मगर उनकी हालत जरब अर्थात ख़ारिश के मरीज़ की सी होती है। जिसको खुजलाने से राहत मिलती है लेकिन इस ख़ारिश का आख़िरी नतीजा क्या होता है? यही कि ख़ून निकल आता है। अतः उन संसारिक और आरिज़ी सफलताओं पर इस क़दर ख़ुश मत हो कि हक़ीक़ी सफलता से दूर चले जाओ बल्कि उन सफलताओं को ख़ुदा शनासी का एक ज़रीया क़रार दो। अपनी हिम्मत और कोशिश पर नाज़ मत करो और मत समझो कि यह सफलता हमारी किसी योग्यता और मेहनत का नतीजा है बल्कि यह सोचो कि इस रहीम ख़ुदा ने जो कभी किसी की सच्ची मेहनत को ज़ाए नहीं करता है, हमारी मेहनत को फलदार किया अन्यथा क्या तुम नहीं देखते कि सदहा तालिब-ए-इलम आए दिन परीक्षा में फ़ेल होते हैं। क्या वे सब के सब मेहनत नहीं करने वाले और बिल्कुल ग़बी और बलीद ही होते हैं? नहीं बल्कि कुछ ऐसे बुद्धिमान और होशयार होते हैं कि पास होने वालों में से अक्सर के मुक़ाबला में होशयार होते हैं। इसलिए वाजिब और ज़रूरी है कि हर सफलता पर मोमिन ख़ुदा तआला के हुज़ूर सजदात शुक्र बजा लाए कि उसने मेहनत को व्यर्थ तो नहीं जाने दिया। इस शुक्र का नतीजा यह होगा कि अल्लाह तआला से मुहब्बत बढ़ेगी और ईमान में तरक़्क़ी होगी और न केवल यही बल्कि और भी कामयाबियां मिलेंगी क्योंकि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि अगर तुम मेरी नेअमतों

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

प्रत्येक नेकी की जड़ यह इत्तिक़ा है अगर यह जड़ रही सब कुछ रहा है

हम ख़ुश-क़िस्मत होंगे अगर हम रमज़ान के इस माहौल से लाभ उठाते हुए वास्तविक रूप में अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करने वाले बन जाएं

असल उद्देश्य तो तक़्वा पैदा करना है अगर यह नहीं तो रोज़े का उद्देश्य ही फ़ौत हो जाता है

रमज़ान में तो क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने, पढ़ाने, सुनने, सुनाने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए। अल्लाह के याद करने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए। इबादात की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए लेकिन बजाय इसके होता यह है कि जो लोग मुख़्तलिफ़ किस्म के काम कर रहे हैं वे अपने कामों से आकर अफ़तारियों की दावतें खाने में व्यस्त जाते हैं

हमें चाहिए कि रमज़ान में रोज़े का हक़ अदा करने की कोशिश करें। तक़्वा जो असल उद्देश्य है उसे हासिल करने की कोशिश करें
शैतान को कोई मामूली चीज़ नहीं समझना चाहिए उसने बड़े चैलेंज से यह बात की थी कि अल्लाह तआला के बंदों की अधिकता मेरे बहकावे में आकर मेरे पीछे चलेगी। अतः हमने रमज़ान में इस के इस चैलेंज का मुकाबला करना है।

ख़ुदा तआला का इस से अर्थात रोज़े से मंशा यह है कि एक आहार को कम करो और दूसरे को बढ़ाओ रोज़े से यही अर्थ है कि इन्सान एक रोटी को छोड़ कर जो जिस्म की परवरिश करती है दूसरी रोटी को हासिल करे जो रूह की तसल्ली और सेरी का माध्यम है। और जो लोग केवल ख़ुदा तआला के लिए रोज़े रखते हैं और निरे रस्म के तौर पर नहीं रखते उन्हें चाहिए कि अल्लाह तआला की हर समय तस्बीह और तहलील में लगे रहें जिससे दूसरा आहार उन्हें मिल जाए। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

तस्बीह करें। इस के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बताई हुई यह दुआ जो इल्हामी दुआ भी है अर्थात "سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ" एक बहुत महत्वपूर्ण दुआ है।

"जो शख़्स क़ुरआन-ए-मजीद की हिदायत पर कारबंद होगा वह मार्फ़त के आला मुक़ाम तक पहुँचेगा।"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"ख़ूब याद रखना चाहिए कि कोई किसी की मुसीबत में काम नहीं आसकता और कोई शरीक हमदर्दी नहीं कर सकता जब तक ख़ुदा ख़ुद दस्तगीरी न करे और अपने फ़ज़्ल से आप इस मुसीबत को दूर न करे।

निसन्देह अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के मरीज़ों और मुसाफ़िरों के लिए रमज़ान में सफ़र की हालत में रोज़ा नहीं रखने को बतौर सदक़ा एक सहूलत क़रार दिया है। क्या तुम में से किसी को यह पसंद है कि वह तुमसे किसी को कोई चीज़ तोहफ़ा दे फिर वह इस चीज़ को तोहफ़ा देने वाले को वापिस लौटा दे। (अल् हदीस)

अतः ख़ुश-क़िस्मत हैं हम में से वे जो इस रमज़ान से हक़ीक़ी लाभ उठाते हुए अपने तक़्वा के मयार को इस मुक़ाम पर लाने की कोशिश करें जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है।

असीरान-ए-राह़-ए-मौला की रिहाई, मुस्लमान देशों और दुनिया के उमूमी हालात के लिए और जंगों के बद असरात से बचने के लिए दुआ की तहरीक

रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ायल और हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में हुसूल-ए-तक़्वा का परिपूर्ण वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 15 मार्च 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ۔ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

(अल् बक़रः : 185)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े इसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा इख़तेयार करो। गिनती के चंद दिन हैं। अतः जो भी तुम में से मरीज़ हो या सफ़र पर हो तो उसे चाहिए कि वह उतने समय के रोज़े दूसरे दिनों में पूरे करे। और जो लोग इस की ताक़त रखते हों उन पर फ़िद्या एक मिस्कीन को खाना खिलाना है। अतः जो कोई भी नफ़ली नेकी करे तो यह उसके लिए बहुत अच्छा है और तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम इलम रखते हो।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से रमज़ान का महीना शुरू हो चुका है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह बहुत अज़ीम और बरकतों वाला महीना है।

(सुंन अल् निसाई किताब अल् सोम बाब ज़िक्र अल् इखतेलाफ़ अला मुअम्मर फ़ी हदीस : 2108)

इस महीना में अल्लाह तआला अपने बंदों को अपने फ़ज़लों से नवाज़ने के लिए बहुत मेहरबान हो जाता है। अल्लाह तआला तो आम दिनों में भी अपने बंदों को इस तरह नवाज़ता है जिसका हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते। इस महीने में जब विशेषता शैतान को जकड़ कर उस के पंजे से निकलने के सामान करता है तो उसके लिए तो हमारे पास शब्द ही नहीं हैं कि किस तरह मिसाल दी जाए। जब भी अल्लाह तआला की तरफ़ हम बढ़ें तो उस के एहसान के दरवाज़े पहले से ज़्यादा खुले हुए पाते हैं। अतः अल्लाह तआला ने यह महीना अपने एहसानों से नवाज़ने का निर्धारित किया है। जो भी अल्लाह तआला की इबादत में पिछले दिनों कमज़ोरी हम दिखा चुके हैं, नवाफ़िल की अदायगी में कमज़ोरी दिखा चुके हैं, क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करने पढ़ने समझने में कमज़ोरी दिखा चुके हैं, क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल करने में कमज़ोरी दिखा चुके हैं उनके लिए इस महीने में सामान कर दिया कि इस महीने में फ़रायज़ भी और नवाफ़िल भी विशेषता अदा करने का माहौल है। इसलिए लाभ उठाओ।

दरस की मसाजिद में भी इंतेज़ाम होता है और एम.टी.ए पर भी इंतेज़ाम है इस से लाभ उठाना चाहिए और अल्लाह तआला के क़ुरब को तलाश करना चाहिए।

और फिर उस माहौल के असर को अपनी ज़िंदगियों का मुस्तक़िल हिस्सा हमें बनाना चाहिए ताकि हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों और एहसानों के मुस्तक़िल वारिस बनते चले जाएं। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस माहौल से बेहतरीन लाभ उठाने की कोशिश करते हुए मेरी तरफ़ बढ़ो और अल्लाह तआला को अपने बंदे की अल्लाह तआला की तरफ़ आने की जितनी ख़ुशी होती है इस का अंदाज़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद से होता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो ख़ुशी माँ को उस के गुमशुदा बच्चे के मिलने की होती है अल्लाह तआला को इस से ज़्यादा ख़ुशी अपने गुमशुदा बंदे के मिलने से होती है।

(सही अल् बुख़ारी किताब كتاب الأدب باب رحمة الولد ... हदीस 5999 तथा सही बुख़ारी किताब अल् दावात 6308 الدعوات بَابُ التَّوْبَةِ)

अर्थात जो लोग अल्लाह का हक और बंदों का हक अदा करने वाले नहीं हैं या उसका हक़ अदा करते हुए अदा नहीं कर रहे, इस में सुस्तियाँ दिखाने वाले हैं वह जब हक़ीक़त में यह हक़ अदा करने वाले बन जाते हैं तो अल्लाह तआला की ख़ुशी की कोई इंतेहा नहीं होती और अल्लाह तआला वह ज़ात है जब वह अपने बंदे से ख़ुश होता है तो उस को इस क़दर नवाज़ता है कि जिसकी इंतेहा नहीं। अतः हम ख़ुश-क़िस्मत होंगे अगर हम रमज़ान के इस माहौल से लाभ उठाते हुए वास्तविक रूप में अल्लाह तआला के फ़ज़लों को जज़ब करने वाले बन जाएं।

यह आयात जो मैं ने तिलावत की हैं उनमें अल्लाह तआला ने जहां तक़्वा पर चलते हुए हमें अपने हुक्मों पर चलने की तरफ़ तवज्जा दिलाई है वहां रोज़े से संबंधित कुछ आदेश का भी वर्णन फ़रमाया है। अतः हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसी पुरहकमत किताब हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया अता फ़रमाई है ताकि हम उस की क़ुर्बतों के हासिल करने वाले बन जाएं, इन रस्तों पर चलने वाले बन जाएं जो उसकी क़ुरबत के रास्ते हैं। यह पहली आयत है। इस के पहले इरशाद में ही हमें आजिज़ाना राहों पर चलने की तरफ़ तवज्जा दिला दी और हमें आजिज़ी की तलक़ीन यह कह कर फ़र्मा दी कि तुम रोज़े रखकर कोई ऐसा काम करने लगे हो जो केवल तुम्हारा ही इमतेयाज़ है, यह नहीं है बल्कि तुमसे पहले लोगों पर भी रोज़े फ़र्ज़ किए गए थे। ठीक है उनके रोज़ों के तरीक़ में शायद कुछ फ़र्क़ होगा लेकिन रोज़े उन पर भी फ़र्ज़ किए गए थे और उद्देश्य यह था कि वह तक़्वा पर चलें और यही रोज़ों का उद्देश्य तुम्हारे लिए भी है कि तुम तक़्वा पर चलो अर्थात तुम ग़लत बातों से बचोगे और नेक बातों को इख़तेयार करो और गुनाहों और ग़लत बातों से इस तरह अपने आपको बचाओ जिस तरह एक जंगजू ढाल के पीछे अपने आपको बचाने की कोशिश करता है और ढाल को सामने रखने वाला जंगजू केवल अपने आपको ही नहीं बचाता बल्कि वह दुश्मन पर वार भी करता है। अतः तुम भी अगर तक़्वा पर चल रहे हो तो न केवल अपने आपको बचाओगे बल्कि शैतान पर और शैतानी ख़्यालात पर हमला कर के इस को भी मार दोगे और यही तरीक़ है जिससे तक़्वा पर चलते हुए रोज़े का हक़ अदा होता है अन्यथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हें भूखा रखने का अल्लाह तआला को कोई शोक नहीं।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् सोम बाब من لم يدع قول الزور... हदीस : 1903)

असल उद्देश्य तो तक़्वा पैदा करना है अगर यह नहीं तो रोज़े का उद्देश्य ही फ़ौत हो जाता है।

आजकल तो मुस्लमानों की बहुत बड़ी संख्या में भूखा रहने वाली बात भी नहीं रही। अक्सर विशेषता जो अमीर लोग हैं सहरी भी बड़े एहतिमाम से खाते हैं और अफ़तारी भी बड़े एहतिमाम से करते हैं। हाँ बेचारा ग़रीब है जिसे सहरी और अफ़तारी भी बड़ी मुश्किल से उपलब्ध आती है लेकिन उनका भी रोज़े में भूख के साथ पानी पीने से रुकना अल्लाह तआला की नज़र में तब मक़बूल होगा जब तक़्वा के रास्तों की भी तलाश करेंगे। अपनी इबादतों को संवारने की कोशिश करेंगे। यहां यह भी वर्णन कर दूं कि अमीरों को चाहिए कि अपने इलाक़े के ग़रीबों की रमज़ान में विशेषता ख़बरगीरी करें। अफ़तारियों में केवल उमरा को ही जमा कर के अफ़तारियों से लुतफ़ अंदोज़ न हों बल्कि ग़रीबों की अफ़तारियों का भी इंतेज़ाम करें और यह जो दावतों के रंग में बड़ी-बड़ी अफ़तारियां होती हैं, उनके हक़ में तो वैसे भी मैं नहीं। यह अब दिखावे और बिद्दत का रंग इख़तेयार कर रहे हैं।

रमज़ान में तो क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने, पढ़ाने, सुनने, सुनाने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए। अल्लाह के याद करने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए। इबादात की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए लेकिन बजाय उसके होता यह है कि जो लोग मुख़्तलिफ़ किस्म के काम कर रहे हैं वह अपने कामों से आकर अफ़तारियों की दावतें खाने में व्यस्त जाते हैं।

और जिन्हों ने अफ़तारियों की दावत की होती है वह भी इस तरफ़ तवज्जा देने की बजाय कि क़ुरआन-ओ-हदीस पढ़ें, अल्लाह के याद करने करें, इबादत की तरफ़ तवज्जा दें इस कोशिश में होते हैं कि किस तरह अच्छे से अच्छा इंतेज़ाम हो, अफ़तारी का सामान हो, कैसी अच्छे से अच्छी अफ़तारी तैयार हो ताकि उनकी वाह वाह हो कि अफ़तारी में बहुत कमाल कर दिया। तो ये चीज़ें रमज़ान का उद्देश्य नहीं हैं। यह तो तक़्वा से दूर ले जाने वाली बातें हैं।

अतः ढाल से लाभ उठाने के लिए ढाल का सही प्रयोग करना भी ज़रूरी है अन्यथा शैतान तो दाएं बाएं, आगे पीछे से हमला करेगा, किस तरह बचाएँगे? और फिर ये शैतान इन्सान को कारी ज़ख़म लगा कर ज़ख़मी भी कर रहा है। अतः हमें चाहिए कि रमज़ान में रोज़े का हक़ अदा करने की कोशिश करें। तक़्वा जो असल उद्देश्य है उसे हासिल करने की कोशिश करें।

अल्लाह तआला की ख़ातिर जायज़ बातों से भी रुकें तो फिर निसन्देह अल्लाह तआला की रहमत की नज़र हम पर होगी और अल्लाह तआला हमारे शैतान को भी जकड़ देगा और नेकियां करने का वसीअ मैदान बिना रोक-टोक हम पार करते चले जाऐंगे। इबादतों और अल्लाह के याद करने का हिसार हमें अल्लाह तआला के फ़ज़ल से शैतानी हमलों और रोकों से बचाता चला जाएगा।

शैतान को कोई मामूली चीज़ नहीं समझना चाहिए उसने बड़े चैलेंज से यह बात की थी कि अल्लाह तआला के बंदों की अधिकता मेरे बहकावे में आकर मेरे पीछे चलेगी। अतः हमने रमज़ान में उस के इस चैलेंज का मुकाबला करना है।

और फिर यह कोशिश करनी है कि हम इबादतों और क़ुरआन के आदेशों पर

अमल करने के हथियार से शैतान का हमेशा मुक़ाबला करते चले जाएं।

हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रोज़े की हक़ीक़त के बारे में वर्णन फ़रमाते हुए एक जगह फ़रमाते हैं : रोज़े की हक़ीक़त से भी लोग अज्ञात हैं। असल यह है कि जिस मुल्क में इन्सान जाता नहीं और जिस संसार से वाक़िफ़ न ह ींउसके हालात क्या वर्णन करे। रोज़ा इतना ही नहीं कि इस में इन्सान भूखा प्यासा रहता है बल्कि उसकी एक हक़ीक़त और इसका एक असर है जो तजुर्बा से मालूम होता है। इन्सानी फ़ित्रत में है कि जिस क़दर कम खाता है उसी क़दर तज़किया नफ़्स होता है और कशफ़ी क़ुव्वतें बढ़ती हैं। लेकिन बदक़िस्मती से आजकल तो रोज़ा खाने पीने का नाम है। बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

ख़ुदा तआला का इस से अर्थात रोज़े से मंशा यह है कि एक आहार को कम करो और दूसरी को बढ़ाओ।

हमेशा रोज़ेदार को यह मद्द-ए-नज़र रखना चाहिए कि इस से इतना ही अर्थ न हींहै कि भूखा रहे बल्कि उसे चाहिए कि ख़ुदा तआला के ज़िक्र में व्यस्त रहे ताकि एकांतवास और इन्क़िता हासिल हो। अर्थात अल्लाह तआला की तरफ़ तवज्जा पैदा हो और दुनिया से बे ग़ुबती हो। अतः रोज़े से यही अर्थ है कि इन्सान एक रोटी को छोड़कर जो जिस्म की परवरिश करती है दूसरी रोटी को हासिल करे जो रूह की तसल्ली और सेरी का बायस है। और जो लोग केवल ख़ुदा तआला के लिए रोज़े रखते हैं और निरे रस्म के तौर पर नहीं रखते उन्हें चाहिए कि अल्लाह तआला की हमदावर तस्बीह और तहलील में लगे रहें जिससे दूसरी आहार उन्हें मिल जाए।

(उद्धृत मल् फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 122-123 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः रमज़ान में क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने और समझने के साथ साथ इबादत और अल्लाह के याद करने भी बहुत ज़रूरी है। दिल अल्लाह तआला की हमद करता रहे।

तस्बीह करें। इस के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बताई हुई यह दुआ जो इल्हामी दुआ भी है अर्थात "سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ ۔ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ" ایک بہت' एक बहुत अहम दुआ है।

(बहवाला तिरयाकुल् क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 208)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वास्ता दुआओं की क़बूलीयत के लिए ज़रूरी है। यह अल्लाह तआला का हुक्म है। इसी तरह तहलील है जो अल्लाह तआला की वहदानियत का इज़हार है। यह भी बहुत ज़रूरी है। अतः यह माध्यम हैं जो तक़्वा में तरक़्क़ी का बायस बनते हैं और क़बूलियत-ए-दुआ के लिए भी अहम हैं। अतः इस तरफ़ हमें विशेष तवज्जा देनी चाहिए।

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में तक़्वा पर चलने की बेशुमार जगह तलक़ीन फ़रमाता है। हर नेकी के हुसूल के लिए तक़्वा शर्त रखी है।

अतः उसकी तरफ़ बहुत तवज्जा की ज़रूरत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस तरफ़ बेशुमार जगह बल्कि क़रीबन हर मजलिस में ही तवज्जा दिलाई है। आप का एक मिसरा है।

"हर इक नेकी की जड़ यह इत्तिक़ा है"

तो अल्लाह तआला ने आप को इल्हामन अगली पंक्तियाँ फ़रमाई कि :

"अगर यह जड़ रही सब कुछ रहा है"

(मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 48 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः तक़्वा ही है जो अल्लाह तआला को पसंद है। तक़्वा ही है जो हर नेकी की तरफ़ लेकर जाता है। तक़्वा ही है जो दुनियावी आलाईशों से पाक करता है। तक़्वा ही है जिससे इन्सान के जस्मानी और रुहानी हर किस्म की ज़रूरत पूरी होती है। अतः तक़्वा का हुसूल एक मोमिन का अव्वलीन फ़र्ज़ होना चाहिए।

जैसा कि मैं ने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी तक़्वा के मज़मून को मुख़्तलिफ़ पैरायों में कई जगह वर्णन फ़रमाया है। आप अलैहिस्सलाम के कुछ इर्शादात भी इस सिलसिला में पेश करता हूँ। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "क़ुरआन शरीफ़ ने शुरू में ही फ़रमाया। هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۔ (अल् बक़रः : 3) अतः क़ुरआन शरीफ़ के समझने और इस के मुवाफ़िक़ हिदायत पाने के लिए तक़्वा ज़रूरी असल है। ऐसा ही दूसरी जगह फ़रमाया। لَا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अल् वाकिया : 80) दूसरे उलूम में यह शर्त नहीं। रियाज़ी, हिंदसा और हैयत इत्यादि ' दूसरे मज़ामीन हैं इन में इस बात की शर्त नहीं कि सीखने वाला ज़रूर मुत्तक़ी और परहेज़गार हो बल्कि ख़ाह कैसा ही फ़ासिक़-ओ-फ़ाजिर हो वह भी सीख सकता है।' बल्कि आजकल तो ये लोग इस मज़मून में बहुत ज़्यादा बढ़े हुए हैं। फ़रमाया "मगर इल्म-ए-देन में ख़ुशक मंतक़ी और फ़लसफ़ी तरक़्क़ी नहीं कर सकता और इस पर वह हक़ायक़ और मआरिफ़ नहींखुल सकते। जिसका दिल ख़राब है और तक़्वा से हिस्सा नहीं रखता और फिर कहता है कि उलूम-ए-दीन और हक़ायक़ उसकी ज़बान पर जारी होते हैं वह झूठ बोलता है। हरगिज़ हरगिज़ उसे दीन के हक़ायक़ और मआरिफ़ से हिस्सा नहीं मिलता बल्कि दीन के लतायफ़ और नुकात के लिए मुत्तक़ी होना शर्त है जैसा कि यह फ़ारसी शेअर है।

عَروسِ حضرتِ قرآں نقاب آنگہ بَرْ دَارَد
"کہ دَارُ الملک معنے را کُنَد خَالِی زِہرَ غوغا

कि फ़ुर्क़ान की दुल्हन तब निक़ाब उठाती है जब बातिन की बस्ती को हर किस्म के शोर-ओ-ग़ौग़ा से ख़ाली कर लिया जाए। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "जब तक यह बात पैदा न हो और दारुल मुल्क अर्थात ख़ाली न हो।' अर्थात दिल की बस्ती जो है वह दुनियावी गंदगियों से पाक करना ज़रूरी है। अगर वह उनसे ख़ाली नहीं है तो फिर कोई लाभ नहीं। फ़रमाया "वह ग़ौग़ा क्या है?" यह शोरशराबा क्या चीज़ है। "यही फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर।" ग़ौग़ा जो गंदगियां हैं, क्या है? यही फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर है, "दुनिया पसंदी है। हाँ यह अलग बात है कि चोर की तरह कुछ कहलाए तो कह दे।' अर्थात जो नेकी की बातें अगर कभी कोई शख़्स कह भी देता है तो वह दूसरों की चोरी की हुई बातें होती हैं, अपनी नहीं होतीं "लेकिन जो रूहुल् क़ुदुस से बोलते हैं वह सिवाए तक़्वा के नहीं बोलते।

यह ख़ूब याद रखो कि तक़्वा समस्त दीनी उलूम की चाबी है। इन्सान तक़्वा के सिवा उनको नहीं सीख सकता।

जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : الٓمّٓ ۔ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल् बक़रः 2-3) यह किताब तक़्वा करने वालों को हिदायत करती है और वे कौन हैं ? الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ (अल् बक़रः 4) जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं। अर्थात अभी वह ख़ुदा नज़र नहीं आता' लेकिन अल्लाह तआला पर उनका ईमान है कि ख़ुदा है और अनुभव भी नहीं है लेकिन फिर भी ईमान लाते हैं कि ख़ुदा है। "और फिर नमाज़ को खड़ी करते हैं अर्थात नमाज़ में अभी पूरा आनंद और ज़ौक़ पैदा नहीं होता।' खड़ी करने का अर्थ यह है कि अभी पूरा आनंद और ज़ौक़ पैदा नहीं होता।"ताहम बेलुतफ़ी और बे ज़ौक़ी और वसवसों में ही नमाज़ को क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है इस में से कुछ ख़र्च करते हैं और जो कुछ तुझ पर या तुझसे पहले नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाते हैं।' फ़रमाया कि "यह मुत्तक़ी के इबतेदाई मदारिज और सिफ़ात हैं।' ये बातें तो एक मुत्तक़ी के इबतेदाई मदारिज हैं, दर्जे हैं और सिफ़ात हैं। यह ईमानी बातें होनी चाहिए। ईमान बिलग़ैब और नमाज़ का क़ियाम ये सब इबतेदाई बातें हैं। फ़रमाते हैं कि "..यहां एतराज़ होता है कि जब वह ख़ुदा पर ईमान लाते हैं। नमाज़ पढ़ते हैं । ख़र्च करते हैं और ऐसा ही ख़ुदा की किताबों पर ईमान लाते हैं। फिर उसके सिवा नई हिदायत क्या हुई?' यह तो पहले ही कर रहे हैं तो फिर अब इस से आगे क्या बढ़ना है। "यह तो गोया तहसील-ए-हासिल हुई।" अर्थात जो पहले है उसी को दुबारा हासिल करना है। फ़रमाया "..इस सवाल का जवाब यह है कि यह इबारतें और ये अल् फ़ाज़ उसी हद तक जो वर्णन की गई हैं इन्सान के कमाल सुलूक और मार्फ़त-ए-तामा पर दलालत नहीं करते।' यह जो इबादतें हैं बेशक यह ठीक हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है यह करो लेकिन यह उस का कमाल नहीं है। इस का आख़िरी उद्देश्य नहीं है। यह तो इबतेदाई चीज़ें हैं कि अल्लाह तआला पर, ग़ैब पर ईमान लाना, नमाज़ें पढ़ना, नमाज़ें गिर जाएं फिर तवज्जा देना, थोड़ा बहुत ख़र्च कर लेना, यह तो नेकियों की तरफ़ ले जाने के लिए इबतेदाई चीज़ें हैं। फ़रमाया "अगर हिदायत का इंतेहाई नुक़्ता يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ तक हो तो फिर मार्फ़त क्या हुई?" अगर हिदायत यही है कि ग़ैब पर ईमान ले आओ तो फिर मार्फ़त क्या हुई। अल्लाह तआला की पहचान किस तरह होगी। "इस जो शख़्स क़ुरआन-ए-मजीद की हिदायत पर कारबंद होगा वह मार्फ़त के आला मुक़ाम तक पहुँचेगा।"

मार्फ़त हासिल करनी है तो क़ुरआन-ए-मजीद की हिदायत को पढ़ो। इन पर

अमल करो। फिर मार्फ़त के मुक़ाम हासिल होंगे। इन्सान ग़ैब के इलम से बाहर आएगा "और वह يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ से निकल कर मुशाहिदा की हालत तक तरक़्क़ी करेगा गोया ख़ुदा तआला के वजूद पर ऐनुल यक़ीन का मुक़ाम मिलेगा।' अमल होगा तो तभी ऐनुल यक़ीन का मुक़ाम मिलेगा।

अतः يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ से निकलने के लिए क़ुरआन-ए-करीम के हुक्मों पर अमल ज़रूरी है। लोग यह सवाल करते हैं कि ग़ैब पर ईमान क्यों लाएं आजकल तो क्यों का सवाल नौजवानों में, बच्चों में बहुत उठता है। जिस चीज़ का हमें पता ही नहीं इस पर ईमान क्यों लाएंगे? अल्लाह तआला फ़रमाता है : ग़ैब पर ईमान तो इबतेदाई शक्ल है। यह किताब जो दी गई है इस पर अमल करो। ईमान लाने के बाद इस पर अमल ज़रूरी है जो तुम्हें अल्लाह तआला की सही पहचान दिलाएगा। तो ग़ैब से बाहर निकल कर मुशाहिदे की हालत पैदा होगी। केवल ग़ैब से नहीं होगा बल्कि ख़ुद आदमी मुशाहिदा करेगा कि कौन ख़ुदा है। यह तो दुनिया का उसूल भी है साइंटिस्ट (scientist) हैं, रिसरचर (researcher) हैं वे जानते हैं कि तजुर्बात में भी पहले एक hypothesis बनता है, इस पर बुनियाद करके रिसर्च होती है और पता नहीं कि वह सच्च साबित हो या न हो लेकिन उस पर तसव्वुर में एक बुनियाद बनाई जाती है और इस पर रिसर्च की जाती है लेकिन अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम ईमान बिलग़ैब की बुनियाद बना कर फिर क़ुरआन के आदेशों पर अमल करो, मेहनत करो, ग़ौर करो, फिर देखो तुम मुशाहिदा भी कर लोगे।

विज्ञानिक तो केवल अपनी रिसर्च के लिए, एक तसल्ली के लिए वह रिसर्च करते हैं और उनकी तसल्ली होती है तो फिर लोगों को बताते हैं लेकिन यहां जो एक तसव्वुर बाँधा और इसके बाद रिसर्च की इससे हर इन्सान लाभ उठा सकता है। यह है इस्लाम की ख़ूबी। यह है ईमान बिलग़ैब की असल हक़ीक़त।

फ़रमाते हैं कि "इसी तरह पर नमाज़ के मुताल्लिक़ इबतेदाई हालत तो यही होगी जो यहां वर्णन की कि वह नमाज़ को खड़ी करते हैं' क़याम का अर्थ खड़ी करना।"अर्थात नमाज़ गोया गिरी पड़ती है। गिरने से मुराद यह है कि इस में ज़ौक़ और लज़्ज़त नहीं। बे ज़ौक़ी और वसावस् का सिलसिला है। इस लिए इस में वह कशिश और जज़्बा नहीं कि इन्सान जैसे भूख प्यास से बेक़रार हो कर खाने और पानी के लिए दौड़ता है इसी तरह पर नमाज़ के लिए दीवाना-वार दौड़े लेकिन जब वह हिदायत पाता है तो फिर यह सूरत नहीं रहेगी। इस में एक ज़ौक़ पैदा हो जाएगा नमाज़ में भी एक लज़्ज़त आएगी। "वसावस् का सिलसिला ख़त्म हो कर इतमीनान और संतुष्टि का रंग शुरू होगा।' आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "कहते हैं किसी शख़्स की कोई चीज़ गुम हो गई तो उसने कहा कि ज़रा ठहर जाओ। नमाज़ में याद आ जाएगी। यह नमाज़ कामिलों की नहीं हुआ करती क्योंकि इस में तो शैतान उन्हें वस्वसा डालता है।" अर्थात चीज़ गुम हो गई उसने कहा अच्छा वैसे तो याद नहीं आरही चलो नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ में मेरे ख़्यालात इधर उधर जाते रहेंगे और आख़िर शायद इस में यह बात याद आजाए कि मैं ने कहाँ वह चीज़ रखी थी तो यह नमाज़ कामिलों की नमाज़ नहीं है, यह शैतानी वस्वसे हैं "लेकिन जब कामिल का दर्जा मिलेगा तो हर वक़त नमाज़ ही में रहेगा।" अर्थात अल्लाह तआला हर वक़त याद रहेगा। "और हज़ारों रुपया की तिजारत और मुफ़ाद भी इस में कोई हर्ज और रोक नहीं डाल सकता।" दुनिया के काम भी होंगे और ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ भी रहेगा, ख़ुदा तआला याद भी रहेगा। फ़रमाया "इसी तरह पर बाक़ी जो कैफ़ियतें हैं वह निरे क़ाल के रंग में नहीं होंगी। उनमें हाली कैफ़ीयत पैदा हो जाएगी और ग़ैब से शुहूद पर पहुंच जावेगा। यह मुरातिब निरे सुनाने ही को नहीं हैं।" यह मर्तबे जो मैं ने वर्णन किए हैं यह केवल सुनाने के लिए नहीं हैं "कि बतौर क़िस्सा तुमको सुना दिया और तुम भी थोड़ी देर के लिए सुनकर ख़ुश हो गए। नहीं यह एक ख़ज़ाना है इस को मत छोड़ो। इसको निकाल लो। यह तुम्हारे अपने ही घर में है और थोड़ी सी मेहनत और प्रयास से इस को पा सकते हो।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 151 से 154 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः आज यह हमारा काम है कि इस माहौल से लाभ उठाते हुए इस खज़ाने को निकालने के लिए मेहनत करें और कोशिश करें ता कि हम भी अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल करने वाले बनें।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं याद रखो कि दुआएं मंज़ूर नहीं होंगी जब तक तुम मुत्तक़ी न हो और तक़्वा इख़्तेयार न करो। तक़्वा की दो किस्में हैं। एक इलम के मुताल्लिक़ दूसरा अमल से मुताल्लिक़। इलम के मुताल्लिक़ तो वर्णन कर दिया है कि उलूम-ए-दीन नहीं आते और हक़ायक़ मआरिफ़ नहीं खुलते जब तक मुत्तक़ी न हो और अमल के मुताल्लिक़ यह है कि नमाज़, रोज़ा और दूसरी इबादात उस वक़्त तक आपूर्ण रहती हैं जब तक मुत्तक़ी न हो। इस बात को भी ख़ूब याद रखो कि ख़ुदा तआला के दो हुक्म हैं। अव्वल यह है कि इस के साथ किसी को शरीक न करो। न उस की ज़ात में, न सिफ़ात में, न इबादात में। और दूसरी बात यह है कि नौ इन्सान से हमदर्दी करो।

(उद्धृत मल् फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 164 ऐडीशन 1984 ई.)

अल्लाह का हक़ अदा करो। बंदों का हक़ अदा करो।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "ख़ुदा तआला फ़रमाता है وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ (अल् तलाक : 3-4) अतः तक़्वा एक ऐसी चीज़ है कि जिसे यह हासिल हो उसे गोया समस्त जहान की नेअमतें हासिल हो गईं।"

तक़्वा इख़्तेयार करोगे तो ऐसे-ऐसे सामान अल्लाह तआला पैदा फ़रमाएगा और ऐसी जगहों से रिज़्क़ देगा जहां तुम्हारा गुमान भी नहीं होगा। फ़रमाया कि "याद रखो मुत्तक़ी कभी किसी का मुहताज नहीं होता बल्कि वह इस मुक़ाम पर होता है कि जो चाहता है ख़ुदा तआला उसके लिए उस के मांगने से पहले मुहय्या कर देता है।" अतः यह अल्लाह तआला का वादा है कि मुत्तक़ी को दुनियावी रिज़्क़ भी देता है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "मैं ने एक दफ़ा कशफ़ में अल्लाह तआला को तुमसल के तौर पर देखा। मेरे गले में हाथ डाल कर फ़रमाया।

जे तू मेरा हो रहे सब जग तेरा हो।

अतः यह वह नुस्ख़ा है।" फ़रमाया 'अतः यह वह नुस्ख़ा है जो समस्त अम्बिया औलिया सलिहा का आज़माया हुआ है।" तुम भी आज़माओ।

फ़रमाते हैं ".. हमारी जमाअत को चाहिए कि तक़्वा की राहों पर क़दम मारें और अपने दुश्मन की हलाकत से बे-जा ख़ुश न हों। तौरात में लिखा है कि बनीइसराईल के दुश्मनों के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि "मैं ने उनको इस लिए हलाक किया कि वे बुरे हैं" इसलिए उनको हलाक किया "न इस लिए कि तुम नेक हो।" तुम्हारी नेकी की वजह से दुश्मन हलाक नहीं हुए बल्कि वह अपनी बदी की वजह से हलाक हुए हैं। "अतः नेक बनने की कोशिश करो।' फ़रमाया "मेरा एक शेअर है

हर इक नेकी की जड़ यह इत्तिक़ा है
अगर यह जड़ रही सब कुछ रहा है

फिर फ़रमाते हैं :

"...तक़्वा एक तिरयाक़ है जो उसे प्रयोग करता है समस्त ज़हरों से नजात पाता है। परंतु तक़्वा कामिल होना चाहिए।

तक़्वा की किसी शाख़ पर अमल पैरा होना ऐसा है जैसे किसी को भूख लगी हो और वह एक दाना खाले। ज़ाहिर है कि उस का खाना और न खाना बराबर है। ऐसा ही पानी की प्यास एक क़तरा से नहीं बुझ सकती। यही हाल तक़्वा का है। किसी एक शाख़ पर अमल मूजिब-ए-नाज़ नहीं हो सकता। अतः तक़्वा वही है जिसकी निसबत अल्लाह-तआला फ़रमाता है اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا (अल् नहल :129) ख़ुदा तआला की मौजूदगी बता देती है कि यह मुत्तक़ी है।" (मल् फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 260 से 262 ऐडीशन 1984 ई.) अर्थात अगर हक़ीक़ी तक़्वा है तो ख़ुदा तआला ख़ुद अपने फ़ज़्ल से बता देता है और उस के फ़ज़्ल का इज़्हार भी होता है। अतः यह तक़्वा है जो हमें हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "जबकि बातों का दोहराना होताहै" बार-बार वही बातें आ रही हैं "परंतु चूँकि ग़फ़लत लगी हुई है। एक तरफ़ वाज़-ओ-नसीहत सुनी जाती है और दिल में तक़्वा हासिल करने के लिए जोश पैदा होता है परंतु फिर ग़फ़लत हो जाती इसलिए हमारी जमात को यह बात बहुत ही याद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला को किसी हालत में न भुलाया जाए। हर वक़त उसी से मदद मांगते रहना चाहिए। इस के बग़ैर इन्सान कुछ चीज़ नहीं।

ख़ूब याद रखो कि वह एक दम में फ़ना कर सकता है। तरह तरह के दुख और मुसीबतें मौजूद हैं। बे-ख़ौफ़ और निडर होने का मुक़ाम नहीं। इस दुनिया में भी

जहन्नुम हो सकता है और बड़े-बड़े मसायब आसकते हैं। ख़ूब याद रखना चाहिए।' अब आजकल तो ऐटमी जंगों की बातें हो रही हैं तो वह भी तो एक जहन्नुम ही है। इस के इलावा भी जो बम हैं वह आग के गोले हैं। फ़रमाया

"ख़ूब याद रखना चाहिए कि कोई किसी की मुसीबत में काम नहीं आसकता और कोई शरीक हमदर्दी नहीं कर सकता जब तक ख़ुदा ख़ुद दस्त-गीरी न करे और अपने फ़ज़ल से आप इस मुसीबत को दूर न करे।

इसी वास्ते प्रत्येक को चाहिए कि ख़ुदा तआला के साथ पोशीदा लगाव रखे। अर्थात पोशीदा ताल्लुक़ रखे। "जो शख़्स साहस के साथ गुनाह, फ़िस्क़े ओ फ़जूर और मासियत में मुबतला होता है वह ख़तरनाक हालत में होता है। ख़ुदा तआला का अज़ाब उसकी ताक में होता है। अगर बार-बार अल्लाह क्रीम का रहम चाहते हो तो तक़्वा इख़्तेयार करो और वह सब बातें जो ख़ुदा तआला को नाराज़ करने वाली हैं छोड़ दो। जब तक ख़ौफ़-ए-इलाही की हालत न हो।"

ये बड़ी अहम, ज़रूरी चीज़ है। फ़रमाया कि "जब तक ख़ौफ़-ए-इलाही की हालत न हो तब तक हक़ीक़ी तक़्वा हासिल नहीं हो सकता" कोशिश करो कि मुत्तक़ी बन जाओ। जब वे लोग हलाक होने लगते हैं जो तक़्वा इख़्तेयार नहीं करते तब वह लोग बचा लिए जाते हैं जो मुत्तक़ी होते हैं। ऐसे वक़्त उनकी ना-फ़रमानी उन्हें हलाक कर देती है और उनका तक़्वा उन्हें बचा लेता है। इन्सान अपनी चालाकियों, शरारतों और ग़द्दारियों के साथ अगर बचना चाहे तो हरगिज़ नहीं बच सकता। कोई इन्सान भी न अपनी जान की हिफ़ाज़त कर सकता है न माल और न औलाद की हिफ़ाज़त कर सकता है और न ही कोई और सफलता हासिल कर सकता है जब तक कि अल्लाह तआला का फ़ज़ल न हो। ख़ुदा तआला के साथ पोशीदा तौर पर ज़रूर ताल्लुक़ रखना चाहिए।" इबादतों और अल्लाह के याद करने और अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल कर के यह पोशीदा ताल्लुक़ क़ायम होता है। फ़रमाया कि :

"ख़ुदा तआला के साथ पोशीदा तौर पर ज़रूर ताल्लुक़ रखना चाहिए और फिर उस ताल्लुक़ को महफ़ूज़ रखना चाहिए।"

अर्थात फिर यह मुस्तक़िल रहे। "अक़लमंद इन्सान वही है जो इस ताल्लुक़ को महफ़ूज़ रखता है और जो इस ताल्लुक़ को महफ़ूज़ नहीं रखता वह बेवक़ूफ़ है।

जो अपनी चतुराई पर घमंडी है वह हलाक किया जाएगा और कभी बा-मुराद और कामयाब नहीं होगा। देखो यह ज़मीन-ओ-आसमान और जो कुछ उनमें नज़र आ रहा है उतना बड़ा कारख़ाना, क्या यह ख़ुदा तआला के पोशीदा हाथ के सिवाए चल सकता है? हरगिज़ नहीं।

याद रखो जो अमन की हालत में डरता है वह ख़ौफ़ की हालत में बचाया जाता है और जो ख़ौफ़ की हालत में डरता है। तो वह कोई ख़ूबी की बात नहीं। ऐसे अवसर पर तो काफ़िर मुशरिक बेदीन भी डरा करते हैं। फ़िरऔन ने भी ऐसे अवसर पर डर कर कहा था

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

(यूनुस : 91)

"अर्थात में ईमान लाता हूँ जिस पर बनी-इसराईल ईमान लाए। इस के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं फ़रमांबर्दारी करने वालों में से हूँ। फ़रमाया "इस से केवल इतना लाभ उसे हुआ कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि तेरा बदन तो हम बचा लेंगे परंतु तेरी जान को अब नहीं बचाएँगे। आख़िर ख़ुदा तआला ने इस के बदन को एक किनारे पर लगा दिया। एक छोटे से क़द का वह आदमी था। ग़रज़ जब गुनाह और मासियत की तरफ़ इन्सान तरक़्क़ी करता है तो फिर لَا یَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا یَسْتَقْدِمُوْنَ (अल् एराफ़ : 35) वाला मुआमला होता है।" अर्थात न इस से एक घड़ी पीछे रह सकते हैं न आगे बढ़ सकते हैं। अतः "जब अजल की बला आ जाती है तो फिर आगे पीछे नहीं हुआ करती। इन्सान को चाहिए कि पहले ही से ख़ुदा तआला के साथ ताल्लुक़ रखे।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 369 से 370 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः ख़ुश-क़िस्मत हैं हम में से वे जो इस रमज़ान से हक़ीक़ी लाभ उठाते हुए अपने तक़्वा के मयार को इस मुक़ाम पर लाने की कोशिश करें जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है।

फिर अगली आयत रोज़े से मुताल्लिक़ है। इस में अल्लाह तआला ने कुछ बुनियादी अहकामात दिए हैं। फ़रमाया कि इन गिनती के चंद दिनों में भी अल्लाह तआला तुम पर रोज़े फ़र्ज़ करने के बावजूद तुम्हें सहूलत मुहय्या करता है लिहाज़ा जो मरीज़ और मुसाफ़िर हैं वह अपने ऊपर बिला-वजह का बोझ न डालें और बाद में सेहत याब होने के बाद या सफ़र ख़त्म होने के बाद रोज़े मुकम्मल कर लें। अतः फ़रमाया फ़र्ज़ पूरा ज़रूर करना है लेकिन ग़ैर ज़रूरी बोझ भी नहीं डालना। फ़ित्री और हंगामी मजबूरियों का ख़्याल भी अल्लाह तआला ने रखा है। अतः अल्लाह तआला ने इन्सान के तक़्वा की क़दर करते हुए कि उसने ख़ुदा तआला की ख़ातिर जायज़ चीज़ों से अपने आपको रोका इन्सान की मजबूरियों में उसे सहूलत भी मुहय्या फ़र्मा दी। अतः जो लोग कहते हैं कि ख़ुदा तआला ने बहुत बोझ हम पर डाल दिया है कुछ अहकाम ऐसे हैं जिनका अंजाम देना बहुत मुश्किल है। कोई भी अल्लाह तआला का हुक्म ऐसा नहीं जो मुश्किल हो। सहूलतें प्रत्येक के साथ हैं। या मज़हब हम पर बोझ डालता है या लामज़हब जो हैं या मज़हब के मुख़ालेफ़ीन जो हैं मज़हब के मानने वालों में फ़ित्ना पैदा करने के लिए कहते हैं कि क्या मज़हब की पाबंदियों में जकड़े हुए हो ये तो तुम्हारे इन्सानी हुक़ूक़ छीन रहा है। इस आयत में भी उन लोगों का जवाब है कि

रोज़े फ़र्ज़ हैं। रोज़ा अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाला बनाता है लेकिन इस के बावजूद फ़ित्री तक़ाज़ों और ज़रूरतों का ख़ुदा तआला ख़्याल रखता है और तुम्हें सहूलत मुहय्या करता है।

वर्ष के दौरान किसी वक़्त भी अपने रोज़े मुकम्मल कर लो और साहब-ए-हैसियत अपने छूटे हुए रोज़ों का कुछ फ़िद्या भी दे दें। प्रत्येक पर फ़र्ज़ नहीं, जो साहिब हैसियत हैं वे दे दें। इस से दोहरा सवाब है। यह ज़ायद नेकी है जो तुम करोगे। तो अल्लाह तआला तो इस तरह नवाज़ने के सामान करता है और फिर दूध पिलाने वाली माएं हैं या मुस्तक़िल बीमार हैं उनको हसब-ए-तौफ़ीक़ फ़िद्या का इरशाद फ़र्मा दिया और क्योंकि अल्लाह तआला आलिमुलग़ैब है, नीयतों को जानता है इसलिए फ़रमाया कि तुम्हारा फ़िद्या रोज़ों के मुतबादिल है। अगर तुम नेक नीयती से यह दे रहे हो। फ़िद्या से ग़रीबों की मदद होती है। गोया यहां फिर बंदों का हक को भी इबादत के सवाब का दर्जा दे दिया। अब फ़िद्या से लाभ कौन उठा रहा है? ग़रीब लोग। लेकिन सवाब उसका इबादत के बराबर हो गया। यह है इस्लाम का ख़ुदा जो सिवाए रहम के और कुछ नहीं। फिर भी इन्सान उसका रहम हासिल करने वाला न बने तो उसकी बदक़िस्मती है।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मज़मून को मज़ीद खोलते हुए फ़रमाते हैं :

"एक दफ़ा मेरे दिल में आया कि फ़िद्या किस लिए निर्धारित किया गया है तो मालूम हुआ कि तौफ़ीक़ के वास्ते है ताकि रोज़ा की तौफ़ीक़ इस से हासिल हो।

ख़ुदा तआला ही की ज़ात है जो तौफ़ीक़ अता करती है और हर शए ख़ुदा तआला ही से तलब करनी चाहिए। ख़ुदा तआला तो क़ादिर-ए-मुतलक़ है वह अगर चाहे तो एक मदक़ूक़ को भी रोज़ा की ताक़त अता कर सकता है। तो फ़िद्या से यही उद्देश्य है कि वह ताक़त हासिल हो जाए और यह ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से होता है। अतः मेरे नज़दीक ख़ूब है कि इन्सान दुआ करे कि इलाही यह तेरा एक मुबारक महीना है। मैं इस से महरूम रहा जाता हूँ और क्या मालूम कि अगले वर्ष ज़िंदा रहूं या न या उन फ़ौत शूदा रोज़ों को अदा कर सकूँ या नहीं। और इस से तौफ़ीक़ तलब करे तो मुझे यक़ीन है कि ऐसे दिल को ख़ुदा तआला ताक़त बख़श देगा।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 258-259 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः रोज़ों के रखने की कोशिश करनी चाहिए और फ़िद्या भी इस नीयत से कि अल्लाह तआला इसे क़बूल करे और रोज़ों की भी तौफ़ीक़ बख़्शे लेकिन बहरहाल जहां अल्लाह तआला ने रुख़स्त दी है इस पर अमल करना भी ज़रूरी है। यही तक़्वा है।

असल तक़्वा यही है कि ख़ुदा तआला के हुक्म की इताअत की जाए।

इसलिए इस मज़मून को वर्णन करते हुए आप एक जगह फ़रमाते हैं : "असल बात यह है कि क़ुरआन शरीफ़ की रुख़स्तों पर अमल करना भी तक़्वा है। ख़ुदा तआला ने मुसाफ़िर और बीमार को दूसरे वक़्त में रोज़े रखने की इजाज़त और रुख़स्त दी है इसलिए इस हुक्म पर भी तो अमल करना चाहिए। मैं ने पढ़ा है कि अक्सर अकाबिर इस तरफ़ गए हैं कि अगर कोई हालत-ए-सफ़र या बीमारी में

रोज़ा रखता है तो यह गलत है।' गुनाह है "क्योंकि उद्देश्य तो अल्लाह तआला की रज़ा है न अपनी मर्ज़ी और अल्लाह तआला की रज़ा फ़रमांबर्दारी में है। जो हुक्म वह दे उस की इताअत की जाए और अपनी तरफ़ से इस पर हाशिया न चढ़ाया जाए।" अपनी ख़ुद-साख़्ता तशरीहें न की जाएं। जैसे आजकल के उल्मा अपने इलम के ज़ोअम में करते रहते हैं। और अब सोशल मीडीया पर तो जो प्लेटफार्म उनको मिल गया है इस में तो फ़िक़्ह के हवाले से अजीब-ओ-ग़रीब मज़हकाख़ेज़ बातें और फ़तवे उन लोगों ने जारी करने शुरू कर दिए हैं। बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "उसने तो यही हुक्म दिया है

مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ

(अल् बक़रः : 185)

"अतः जो भी तुम में से मरीज़ हो या सफ़र पर हो तो वह इतने रोज़े दूसरे दिनों में पूरे करे। "इस में कोई क़ैद और नहीं लगाई कि ऐसा सफ़र हो या ऐसी बीमारी हो।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 72-73 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स मरीज़ और मुसाफ़िर होने की हालत में रमज़ान के महीने में रोज़ा रखता है वह ख़ुदा तआला के सरीह हुक्म की ना-फ़रमानी करता है। ख़ुदा तआला ने साफ़ फ़र्मा दिया है कि मरीज़ और मुसाफ़िर रोज़ा न रखे। मर्ज़ से सेहत पाने और सफ़र के ख़त्म होने के बाद रोज़े रखे। ख़ुदा तआला के इस हुक्म पर अमल करना चाहिए क्योंकि निजात इस के "फ़ज़ल से है न कि अपने आमाल का ज़ोर दिखा कर कोई निजात हासिल कर सकता है मरीज़ और मुसाफ़िर अगर रोज़ा रखेंगे तो उन पर हुक्मउदूली का फ़तवा लाज़िम आएगा।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 431 ऐडीशन 1984 ई.)

एक शख़्स ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रमज़ान के महीने में सफ़र की हालत में रोज़ा और नमाज़ के बारे में सवाल किया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रमज़ान में सफ़र की हालत में रोज़ा न रखो। इस पर इस शख़्स ने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं रोज़ा रखने की ताक़त रखता हूँ। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया कि तू ज़्यादा ताक़तवर है या अल्लाह? फ़रमाया :

निसन्देह अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के मरीज़ों और मुसाफ़िरों के लिए रमज़ान में यात्रा की हालत में रोज़ा नहीं रखने को बतौर सदक़ा एक रियाइत क़रार दिया है। क्या तुम में से किसी को यह पसंद है कि वह तुमसे किसी को कोई चीज़ तोहफ़ा दे फिर वह इस चीज़ को तोहफ़ा देने वाले को वापस लौटा दे।

(कंज़ुल अम्माल भाग 8 सफ़ा 611 हदीस 24384 मतबूआ मोअस्सा अल् रिसाला बेरूत 1985 ई.)

अतः तक़्वा यही है कि अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करो। जिस नेकी को भी वह कहे उस वक़्त करो और जिस वक़्त कहे वह उस वक़्त करो और जिसे कहे छोड़ दो तो छोड़ दो।

अल्लाह तआला हमें रमज़ान अल्लाह तआला की रज़ा पर चलते हुए तक़्वा से गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमें अपने तक़्वा के मयार ऊंचे करने की तौफ़ीक़ दे। न ही रोज़ों से बचने के बहाने हम तलाश करने वाले हों और न बिला-वजह सख़्ती अपने ऊपर वारिद करने वाले हों और हमेशा इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम पर अमल करने वाले हों और इस रमज़ान में हम अल्लाह तआला की बेशुमार बरकात हासिल करने वाले हों। हर दिन हमारे लिए बरकतों और रहमतों के सामान लेकर आए। रमज़ान से हम हक़ीक़ी फ़ैज़याब होने वाले हों। यह रमज़ान हमें अल्लाह तआला के क़रीब-तर करने वाला हो। मक़बूल दुआओं की हमें तौफ़ीक़ मिले। समस्त दुनिया के अहमदी जमाअती प्रगति और समस्त मुश्किलात दूर होने के लिए भी दुआ करें। हुकूमतों और हर शरीर के शर से अल्लाह तआला हमें सुरक्षित रखे।

असीरान की रिहाई के लिए भी दुआ करें।

कुछ उनमें से बड़ी मुश्किल में गिरफ़्तार हैं और यह दुआ करें कि हम अल्लाह तआला का दामन ऐसा पकड़ें कि कभी हमारी किसी लग़्ज़िश की वजह से यह दामन न छूटे और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की बारिश हमेशा हम पर बरसती रहे।

मुस्लमान दुनिया के लिए भी दुआ करें।

अल्लाह तआला उन्हें अक़्ल और समझ दे और वह आने वाले मसीह मौऊद और मह्दी मौऊद को मानने वाले हों।

जंगों के बद असरात से बचने के लिए भी दुआ करें। मुस्लमान देशों में इक़्तेदार की ख़ातिर जो जंगें लड़ी जा रही हैं और इस के नतीजा में जो मासूम अवाम ज़ुलम की चक्की में पिस रहे हैं अल्लाह तआला उन पर भी रहम करते हुए इन ज़ालिमों से नजात दे।

दुनिया के उमूमी हालात के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला जंग और इस के ख़तरनाक नतायज से बचाए। जंग की सूरत में ज़ाहिर है कि अहमदी भी इस से प्रभावित होंगे। अल्लाह तआला उन्हें इस से महफ़ूज़ रखे। इस से बचने के लिए भी हर अहमदी को अपने तक़्वा का मयार ऊंचा करना होगा यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है। अल्लाह तआला इसकी भी प्रत्येक को तौफ़ीक़ दे।

यहां यूके में भी लगता है मुस्लमानों के गर्द दायरा तंग करने की कोशिश की जा रही है। एक क़ानून शिद्दत पसंदी को ख़त्म करने के लिए लाया गया है लेकिन उमूमी तजज़िया कारों का ख़्याल यह है कि यह मुस्लमानों को टार्गेट करने के लिए है। बहरहाल अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि इस के पीछे क्या है, क्या इरादे उन लोगों के हैं लेकिन दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमें भी और यहां के बाक़ी मुस्लमानों को भी इस के उपद्रव से सुरक्षित रखे।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

का शुक्र करोगे तो जबकि मैं नेअमतों को ज़्यादा करूँगा और अगर नाशुकरी करोगे नेअमत की तो याद रखो सख़्त अज़ाब में गिरफतार होगे।

मोमिन और काफ़िर की सफलता में फ़र्क़

इस उसूल को हमेशा मद्द-ए-नज़र रखो। मोमिन का काम यह है कि वह किसी सफलता पर जो उसे दी जाती है शर्मिंदा होता है और ख़ुदा की हमद करता है कि उसने अपना फ़ज़्ल किया और इस तरह पर वह क़दम आगे रखता है और हर इबतेला में साबित-क़दम रह कर इनाम पाता है। बज़ाहिर एक हिंदू और मोमिन की सफलता एक रंग में समान होती है लेकिन याद रखो कि काफ़िर की सफलता ज़लालत की राह है और मोमिन की सफलता से इसके लिए नेअमतों का दरवाज़ा खुलता है। काफ़िर की सफलता इस लिए ज़लालत की तरफ़ ले जाती है कि वह ख़ुदा की तरफ़ रुजू नहीं करता बल्कि अपनी मेहनत,दानिश और योग्यता को ख़ुदा बना लेता है परंतु मोमिन ख़ुदा की तरफ़ रुजू करके ख़ुदा से एक नया परिचय पैदा करता है और इस तरह पर हर एक सफलता के बाद उसका ख़ुदा से एक नया मुआमला शुरू हो जाता है और इस में तबदीली होने लगती है। اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا (अल् नहल : 129) ख़ुदा उनके साथ होता है जो मुत्तक़ी होते हैं। याद रखना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ में तक़्वा का लफ़्ज़ बहुत मर्तबा आया है। इस के माने पहले लफ़्ज़ से किए जाते हैं। यहां माआ का लफ़्ज़ आया है अर्थात जो ख़ुदा को मुक़द्दम समझता है ख़ुदा उसको मुक़द्दम रखता है और दुनिया में हर किस्म की ज़िल्लतों से बचा लेता है। मेरा ईमान यही है कि अगर इन्सान दुनिया में हर किस्म की ज़िल्लत और सख़्ती से बचना चाहे तो उसके लिए एक ही राह है कि मुत्तक़ी बन जाए। फिर उसको किसी चीज़ की कमी नहीं। अतः मोमिन की कामयाबियां उसको आगे ले जाती है और वह वहीं ही नहीं ठहर जाता।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 134 प्रकाशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

27 सितंबर 2022-ए- (मंगल के दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अदायगी में मसरूफ़ियत रही।

मुआइना नुमाइश

इसके बाद प्रोग्राम के मुताबिक़ दोपहर एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम से जुड़ी नुमाइश हाल में तशरीफ़ ला कर नुमाइश का मुआइना फ़रमाया। इस नुमाइश को निम्नलिखित 10 हिस्सों में तक़सीम किया गया है।

अल्लाह तआला, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इस्लाम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, क़ुरआन-ए-करीम और तराजुम, इमाम महदी के बारे में जुमला मज़ाहिब की भविष्यवाणी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दआवी और निशानात, डाक्टर इलैगज़ेंडर डोई शदीद मुआनिद इस्लाम और उसकी इस्लाम दुश्मनी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पुर मआरिफ़ जवाब और दावत मुबाहला, डाक्टर डोई का उरूज और इबरतनाक अंजाम, फ़तह अज़ीम का जारी सफ़र।

इन समस्त दस मज़ामीन को इलेक्ट्रिक रूप में प्रत्येक हिस्सा में एक बड़ी टी.वी स्क्रीन video looping के ज़रीया ज़ाहिर किया गया है। प्रत्येक हिस्सा में टी.वी स्क्रीन के नीचे शीशे के एक showcase में इस हिस्सा के मज़मून के मुताल्लिक़ जुमला नवादिरात रखे गए हैं। इस नुमाइश में जो अहम अश्याय रखी गई हैं इन में डाक्टर डोई के सौ साल पुराने नवादिरात की तसावीर, रिव्यू आफ़ रीलीजिंज़ के वे इबतिदाई शुमारे रखे गए हैं जिन में डाक्टर डोई को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चैलेंज दिया था और इस की हलाकत के बारे में भविष्यवाणी फ़रमाई थी। यह 1902 ई., 1905 ई. और 1907 ई. के शुमारे हैं।

डाक्टर डोई के रिसाले “leaves of healing” के वे शुमारे भी रखे गए हैं जिनमें इस ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में गंद उछाला था। ये शुमारे इसलिए रखे गए हैं ताकि यह बताया जाए कि डाक्टर डोई के इस बुग़ज़-ओ-इनाद के मुक़ाबला में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ को हथियार के तौर पर पेश किया। 1902 ई. और 1903 ई. के वे असल अख़बारात भी रखे गए हैं जिनमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर के साथ वे चैलेंज भी रक़म है जो आप ने डोई को संबोधित करते होते हुए दिया था। अख़बारात में library digest और तीन मज़ीद अख़बारात शामिल हैं।

अख़बार boston herald सफ़ा बड़ा कर के 5X7 फुट के साइज़ में दीवार पर आवेज़ां किया गया है जिसकी सुरख़ी (headline)निमंलिखित है “great is mirza ghulam ahmad” हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सैक्शन में हुज़ूर अलैहिस्सलाम का एक कोट भी शीशे के शोकेस में रखा गया है जो आप अलैहिस्सलाम ज़ेब-ए-तन फ़रमाते थे।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में ग़ैरों की आरा में एक काबिल-ए-ज़िक्र emperor ming हैं जिन्हों ने 1573 ई. में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में एक चाइनीज़ ज़बान के अलफ़ाज़ पर मुश्तमिल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदह में नज़म लिखी है जो चीन के देश में अढ़ाई हज़ार मसाजिद में मौजूद है इस का अंग्रेज़ी अनुवाद पेश किया है।

अख़बार boston herald के 28 जून 1907 ई. के शुमारा में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर के साथ हज़ूर दीगर पेशगोइयों का वर्णन है जिनमें ज़लाज़िल, दमदार सितारा और चांद सूरज गरहन और ताऊन इत्यादि शामिल हैं। इन सब के अख़बारी नुस्ख़ाजात showcase में रखे गए हैं।

नुमाइश की एक अत्यधिक अहम चीज़ kiosk है जिसमें 160 अख़बारी तराशे जमा किए गए हैं और world map के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को touch करने से ये समस्त तराशाजात 60 इंच की टीवी स्क्रीन पर वाज़िह हो जाते हैं और साफ़ पढ़े जाते हैं। ये समस्त तराशा जात 1902 ई. से लेकर 1909 की दहाई में अमरीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, बर्तानिया, असकाट लैंड और इंडिया के अख़बारों में शाय हुए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नुमाइश के मुआइना के दौरान kiosk को launch किया और डाक्टर डोई के ज़िक्र, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी और डोई के इबरतनाक अंजाम के हवाला से मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के अख़बारात का मुशाहिदा किया। जिनमें alaska nebraska न्यूयार्क और बोस्टन इत्यादि के अख़बार शामिल थे।

नुमाइश में दीवार पर जो मुख़्तलिफ़ टीवी स्क्रीन लगाए गए हैं उनमें एक टी.वी स्क्रीन पर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़तह के14 तराशे ख़ुदबख़ुद मंज़र-ए-आम पर आते हैं और मुख़्तलिफ़ देशों में शाय होने वाले अख़बारात चंद मिनटों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़तह और तसदीक़ का ऐलान कर रहे होते हैं।

एक टी.वी स्क्रीन 20 अख़बारात के वे तराशे हैं जिनमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के डोई को दीए जाने वाले मुबाहला, चैलेंज का वर्णन है। ये तराशे टी.वी स्क्रीन पर बग़ैर कोई बटन दबाए या टीवी स्क्रीन को touch किए तबदील होते हैं। टी.वी स्क्रीन के सामने हाथ हिला कर इशारा करें तो अगला तराशा जाता है। इस तरह सिर्फ हाथ के इशारा से जो तराशा भी आप देखना चाहते हैं वे आपके सामने आ जाएगा।

एक टी.वी स्क्रीन पर हाथ के इशारा से बदलते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वे इक़तेबासात हैं जिनमें ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ के बारे में तालीमात वर्णन की गई हैं। एक कालम पर newyork times की वे इबारत दर्ज है जिसका अनवान rival prophets है। इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुरज़ोर अलफ़ाज़ में डोई को चैलेंज दिया है।

जिस showcase में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कोट आवेज़ां है इस के ऊपर दीवार पर यह दर्ज है “बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँडेंगे”

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नुमाइश के मुआइना के दौरान डोई के नवादिरात देख कर फ़रमाया कि मूसा के ज़माने में फ़िरऔन था जिसकी mummy को महफ़ूज़ किया गया। आज (डोई के) इन नवादिरात को महफ़ूज़ कर के आपने इस निशान को महफ़ूज़ कर लिया है।

नुमाइश का एक हिस्सा क़ुदरत सानिया के हवाला से तैयार किया गया था कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त अहमदिया के ज़रीया जमाअत अहमदिया मुसलसल तरक़्क़ी कर रही है तो दूसरी तरफ़ डोई और उसकी जमाअत का वजूद हमेशा के लिए ख़त्म हो चुका है। showcase में खलिफ़ा की बाअज़ कुतुब रखी गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यह कुतुब देखकर फ़रमाया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो और ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की कुतुब भी शामिल करें।

चांद सूरज गरहन के हवाला से पुराने अख़बारात के तराशे रखे गए थे 1895 ई. के अख़बारी तराशे देखकर हुज़ूर ने फ़रमाया कि मग़रिब के लिए 1895 ई. में ग्रहण लगा था और अहल-ए-मशरिक़ के लिए 1894 ई. में ग्रहण लगा था।

नुमाइश के आख़िरी हिस्सा में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोया “ग़ुलाम अहमद की जय” को स्क्रीन पर दिखाया गया था। और तबर्रुकात को ज़ाहिर किया गया था। हुज़ूर अनवर ने उसे देखकर फ़रमाया कि “मेरे हाथ में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दो तबर्रुकात हैं” हुज़ूर अनवर ने अपने हाथ में पहनी हुई दोनों अँगूठीयों “الیس اللہ بکافٍ عبدہ’ और “मौला बस” की तरफ़ इशारा किया।

इस नुमाइश का मुकम्मल इंतेज़ाम आदरणीय अनवर महमूद ख़ान साहब नैशनल सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद और उनकी टीम ने बड़ी मेहनत से किया। आख़िर पर इस

टीम के मैंबरान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तसावीर बनवाने की सआदत पाई।

मस्जिद फ़तह अज़ीम की तख़्ती की निक़ाब कुशाई और मीनार का संग-ए-बुनियाद

नुमाइश के मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बैरूनी दीवार पर लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मीनारा का संग-ए-बुनियाद रखा। शहर की इंतेज़ामिया की तरफ़ से मस्जिद के साथ मीनारतुल मसीह की तर्ज़ पर एक मीनारा तामीर करने की भी मंज़ूरी मिली है। इस की उंचाई 70 फ़ुट होगी।

मस्जिद फ़तह अज़ीम और इस से मुल्हिक़ा हाल और दफ़ातिर को एक नक़्शा की सूरत में बोर्ड पर आवेज़ां किया गया था। हुज़ूर अनवर ने यह नक़शाजात देखे। आदरणीय फ़लाहउद्दीन शमस साहिब नायब अमीर यू. एस. ए. ने इस प्राजैक्ट के हवाला से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ उमूर अर्ज़ किए और बताया कि हमारे इस क़ता ज़मीन का कुल रकबह 10 एकड़ है जिसमें से इस वक़्त अढ़ाई एकड़ ज़ेर-ए-इस्तेमाल है। मस्जिद और दफ़ातिर की तामीर है गेस्ट हाऊस की तामीर है एक वसीअ पार्किंग एरिया बनाया गया है और इसी अढ़ाई एकड़ रकबा में मुख़्तलिफ़ जगहों पर मारकीज़ भी लगाई गई हैं।

हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि जो बाक़ी साढ़े सात एकड़ रकबा है वह इस नक़्शा के मुताबिक़ किस तरफ़ है तो इस पर मौसूफ़ ने इस हिस्सा की निशानदेही करते हुए बताया कि इस तरफ़ है और इस रकबा पर दरख़्त लगे हुए हैं। हुज़ूर अनवर ने पार्किंग एरिया के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया तो अर्ज़ किया गया कि मस्जिद के पार्किंग एरिया में 95 गाड़ियां आ सकती हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद से मुल्हिक़ा हाल और दफ़ातिर का मुआइना फ़रमाया। नुमाइश हाल के इलावा लाइब्रेरी है। दफ़ातिर में, दफ़्तर सदर जमाअत और लजना के दफ़ातिर शामिल हैं। चिल्डर्न क्लास के लिए भी एक कमरा मुहय्या किया गया है। आडीयो वीडीयो रुम भी है और एक लांडरी रुम भी बनाया गया है। लिफ़्ट की सहूलत भी मुहय्या की गई है। दो स्टोरेज रूमज़ भी हैं।

हुज़ूर अनवर फ़्लोर (basement) में भी तशरीफ़ ले गए जहां एक मल्टी परपज़ हाल (multi purpose hall) तामीर किया गया है। जिसका रकबा 2451 मुरब्बा फुट है। इस वक़्त उसे नमाज़ की अदायगी के लिए प्रयोग किया जा रहा है। इस हाल में 300 अफ़राद नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस हाल में मर्दों और औरतों के लिए अलैहदा अलैहदा वाश रूमज़ बनाए गए हैं और कमर्शीयल किचन भी मौजूद है।

मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

रीलीजन न्यूज़ सर्विस की सहाफ़ी का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू :

रीलीजन न्यूज़ सर्विस (religion news service) की एक सहाफ़ी emily miller हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू करने के लिए आई हुई थीं। मौसूफ़ा के अमरीका में लाखों फालोवरज़ हैं। ये सहाफ़ी ख़ातून मस्जिद फ़तह अज़ीम के पस-ए-मंज़र और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डाक्टर डोई के दरमयान मुबाहला पर एक मज़मून लिख रही हैं।

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां इंटरव्यू का प्रोग्राम था।

* इंटरव्यू के आग़ाज़ में जर्नलिस्ट ने पहला सवाल यह किया कि इस मस्जिद के उद्घाटन के लिए हुज़ूर का यहां आना क्या एहमियत रखता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम जहां भी मस्जिद बनाते हैं उमूमन वहां की जमाअत मुझ से पूछती है कि क्या मेरा वहां आना मुम्किन है? जर्मनी हो या बर्तानिया हो या कोई और हो। covid से पहले मैं मसाजिद के उद्घाटन के लिए जाया करता था लेकिन यहां zion में एक ख़ास चीज़ है जैसा कि आपने नुमाइश में भी देखा है तो यह भी मुख़्तलिफ़ वजूहात में से एक वजह है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैं आम तौर पर मसाजिद का उद्घाटन करता हूँ और वहां अपनी जमाअत के अफ़राद से मिलता हों। इस तरह उनकी हौसला-अफ़ज़ाई होती है और मैं उन्हें नसाएह करता हूँ और बताता हूँ कि मस्जिद की तामीर का मक़सद किया है। यह न हो कि आप सिर्फ उसको आरिज़ी तौर पर या कुछ ख़ास होने की वजह से मनाएं बल्कि असल यह है कि हमारी ज़िंदगी और हमारे दीन का मक़सद अल्लाह तआला की इबादत करना है मसाजिद इसी मक़सद के लिए तामीर की जाती हैं और मैं अपने लोगों को याद दिलाता हूँ कि उन्हें सिर्फ मस्जिद की तामीर पर ख़ुश नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें हक़ीक़त में यह एहसास होना चाहिए कि उनकी ज़िंदगी का मक़सद क्या है, तो इस तरह उनकी राहनुमाई होती है और फिर वे अपने आप में तबदीलीयां पैदा करते हैं और समझते हैं कि उनके फ़रायज़ और ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं।

*जर्नलिस्ट ने दूसरा सवाल किया कि इस मस्जिद का नाम फ़तह अज़ीम है इस से क्या मुराद है? फ़तह किस की है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अगर आप ये नुमाइश देखी तो आपको समझ आएगी कि मसीह मुहम्मदी और तथाकथित मसीह का मुक़ाबला कैसे शुरू हुआ, इसलिए यही दुआओं का मुक़ाबला था जिसका ऐलान सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने किया। पहले आप ने डोई को नसीहत की कि तुम अम्बिया और मुक़द्दस लोगों के ख़िलाफ़ ये ग़लीज़ ज़बान न प्रयोग करो लेकिन वे आपके ख़िलाफ़ बदज़ुबानी करता रहा। यहां तक कि इस ने कह दिया कि मैं दुआ करूँगा कि पूरी उम्मत मुस्लिमा और प्रत्येक मुस्लमान तबाह हो जाएँ। इस पर जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने फ़रमाया कि पूरे मज़हब को तबाह करने के बजाए हम दो लोग हैं इसलिए एक दूसरे के ख़िलाफ़ दुआ करते हैं। और फिर दुआओं का मुक़ाबला शुरू हो गया था और ख़ुदा तआला ने आपको बताया कि इस मुबाहला में फ़तह तुम्हारी होगी और फिर बिलआख़िर ऐसा ही हुआ। तो "फ़तह अज़ीम" का यह नाम आपको अल्लाह तआला ने बताया था। इसलिए जब हमने ये मस्जिद बनाई तो जमाअत ने इस का नाम रखने की दरख़ास्त की तो इस पर मैंने कुछ नाम तजवीज़ किए और जमाअत से कहा कि कोई ऐसा नाम मुंतख़ब करें जिसको अमरीका के बाशिंदे आसानी से बोल सकते हूँ लेकिन मुक़ामी जमाअत ने इसरार किया कि यह नाम "फ़तह अज़ीम" इस मस्जिद के लिए मुनासिब है फिर मैंने उसकी मंज़ूरी दी तो इस तरह इस मस्जिद का नाम "फ़तह अज़ीम" रखा गया।

*फिर जर्नलिस्ट ने सवाल किया कि अमरीका के बाशिंदों के लिए इस मुबाहला का वाक़िया जानना क्यों ज़रूरी है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह केवल अमरीका के बाशिंदों के लिए ही अहम नहीं है बल्कि यह सब के लिए अहम है। प्रत्येक अमरीकी तारीख़ में दिलचस्पी नहीं रखता लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बहुत शौक़ीन हैं वे सोचते हैं कि उन्हें अपने मुल्क में रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोगों की तारीख़ और मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और उनके पस-ए-मंज़र के बारे में जानना चाहिए। इस लिए जो लोग दिलचस्पी रखते हैं वह यहां आएं और हमारी तारीख़ जानें और यह कि किसी एक मज़हब की फ़तह नहीं है दरअसल लोगों को यह बताने की फ़तह है कि ख़ुदा का सच्चा बंदा कौन है और यह कि एक दूसरे के ख़िलाफ़ कोई गाली ग्लोच नहीं करनी चाहिए। हमें समस्त मज़ाहिब का एहतिराम करना चाहिए। यही क़ुरआन-ए-करीम की तालीम है और यही बात सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने कही है कि तुम एक दूसरे का एहतेराम करो और यह कि इन्सान की पैदाइश का असल मक़सद अल्लाह की इबादत है इस लिए आपका जो भी तरीक़ा है जिस मज़हब को भी आप मानते हैं आप इस असल मक़सद के मुताबिक़ अमल करो लेकिन दूसरे लोगों के ख़िलाफ़ ग़लीज़ ज़बान या गाली ग्लोच का प्रयोग न करें। तो अब जब हम इस तारीख़ को लोगों के सामने वर्णन करेंगे। तारीख़ से दिलचस्पी रखने वालों और मज़हब से दिलचस्पी रखने वालों को मालूम होगा कि यह सब कुछ ऐसा ही हुआ।

*इसके बाद जर्नलिस्ट के इस सवाल पर कि आपके मुताबिक़ लोगों पर इस मुबाहला के क्या असरात होंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमारा काम इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाना है और इस्लाम कहता है कि देन में कोई जबर नहीं है और आप किसी को अपना मज़हब तबदील करने पर मजबूर नहीं कर सकते और जो लोग इस्लाम क़बूल नहीं करते वे कम अज़ कम ये समझ लेंगे कि इस्लाम हमें एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहने और अपने फ़राइज़ अदा करने का कहता है। बांई सिलसिला अहमदिया ने कहा कि मेरे आने का मक़सद लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाना और अल्लाह तक पहुंचाना है उन्हें यह समझाना है कि अल्लाह की इबादत कैसे करनी है और अल्लाह की इबादत क्यों करनी है और अपने ख़ालिक़ के सामने झुकना है और दूसरा मक़सद लोगों को एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने का एहसास दिलाना है लोगों को एक दूसरे का एहतराम करना चाहिए। उन्हें एक दूसरे के मज़हब का एहतराम करना चाहिए और यही बात क़ुरआन-ए-करीम सिखाता है और यही हम मानते हैं और यही है जिसकी हम तब्लीग़ करते हैं।

* फिर जर्नलिस्ट ने आख़िरी प्रशन यह किया कि क्या अब दुनिया में organized religion अर्थात मुनज़्ज़म मज़हब का कोई किरदार है क्या मज़हब अमन की आवाज़ बन सकता है?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम कहते हैं कि दीन का उद्देश्य किसी को डराना नहीं है जैसा कि मैं पहले आपको बता चुका हूँ कि सिलसिला

अहमदिया के संस्थापक दो उद्देश्यों के लिए दुनिया में ज़ाहिर हुए और आपने इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात को ज़िंदा करने का दावा किया और यह तालीम दो उसूलों पर मुश्तमिल है हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद। इसलिए अगर आप इन दोनों फ़रायज़ को जानते हैं तो फिर हम से डरने की ज़रूरत नहीं। हम ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हैं। हम जिसकी तब्लीग़ करते हैं इस पर अमल करते हैं हम इस किस्म के जुनूनी मुल्ला, शरपसंद नहीं हैं जो समाज की शांति ख़राब कर रहे हैं।

हम कहते हैं कि हमें अमन से रहना चाहिए और हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। यहां तक कि क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि तुम एक दूसरे के मज़हब का एहतराम करो। क़ुरआन-ए-करीम यह भी कहता है कि तुम बुत परस्तों के ख़िलाफ़ कोई बदज़बानी भी न करो क्योंकि वह इंतेक़ाम में अल्लाह के ख़िलाफ़ वही ज़बान प्रयोग करेंगे। इसलिए डरने की ज़रूरत नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : जहां तक मस्जिद का उद्देश्य है और हम किस तरह रहते हैं हम यहां क्या करने जा रहे हैं में अपने ख़िताब में भी वर्णन करूँगा।

यह इंटरव्यू 6 बजकर 20 मिनट पर ख़त्म हुआ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के मुताबिक़ फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

आज शाम के सैशन में 23 फ़ैमिलीज़ के 152 अफ़राद ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का शरफ़ पाया। इन सभी अफ़राद ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थियों को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चीयों को चॉकलेट अता फ़रमाए। आज ज़ाइन (zion) की जमाअत के इलावा indiana oshk osh chicago milwauk ee iowa seattle si licon valley की जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ ने भी शरफ़ मुलाक़ात पाया। बाअज़ फ़ैमिलीज़ बड़ा लम्बा सफ़र तै कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। सयाटिल से वालेला 2014 मील और सिलीकोनवैली से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2190 मील का सफ़र तै कर के आई थीं। मुलाक़ातों का प्रोग्रा 8 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

30 सितंबर 2022 ई (शुक्रवार के दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा, हुज़ूर अनवर की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अंजाम दही में व्यस्तता रही।

आज जुम्मतुल मुबारक का दिन था। आज का यह दिन कई लिहाज़ से एक इतिहासिक दिन है जो हमेशाअहमदियत की तारीख़ में याद रखा जाएगा। आज हुज़ूर अनवर के ख़ुतबा जुमा के साथ डाक्टर अलेक्जेंडर डोवी के ज़ायन (zion) शहर में मस्जिद फ़तह अज़ीम का उद्घाटन हो रहा था। फिर ज़ायन की ज़मीन से ख़लीफ़तुल मसीह का यह पहला ऐसा ख़ुतबा जुमा है जो एम.टी.ए इंटरनैशनल के माध्यम से सारी दुनिया में सीधे लाईव प्रसारित हो रहा था।

इस से पूर्व अमरीका के पूर्वी भाग वाशिंगटन डी.सी, harrisburg और साउथ के इलाक़ा हेविसटन और पश्चिमी भाग लास एंजलीज़ से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुतबात जुमा.एम.टी. ए. पर लाईव प्रसारित हो चुके हैं।

डाक्टर डोई ने तो यह कहा था कि उसके अपने बसाए हुए शहर ज़ायन से इस्लाम की आवाज़ हमेशा के लिए दबा दी जाएगी। इस्लाम का कोई नाम-लेवा भी नहीं होगा।

आज अल्लाह-तआला के फ़ज़ल से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा की ज़बान से इलहाम "फ़तह अज़ीम" के अंतर्गत, न केवल डोई के इस शहर में इस्लाम की आवाज़ गूंज रही है बल्कि यहां से डोई के देश अमरीका में भी यह आवाज़ गूंज रही है और सबसे बढ़कर यह कि यह आवाज़ यहां से समस्त संसार में, सारी दुनिया में, देश देश, स्थान स्थान, बस्ती-बस्ती सुनाई दे रही है। अतः आज इस शहर का चप्पा चप्पा और यहां के दिन रात का लम्हा लम्हा हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त पर गवाही दे रहा है। سبحان اللہ وبحمدہ سبحان اللہ العظیم۔

नमाज़-ए-जुमा में ज़ायन (zion) के इलावा अमरीका की मुख़्तलिफ़ दूसरी जमाअतों से अहबाब बड़े लंबे और तवील फ़ासले तै करके शामिल होने के लिए पहुंचे थे। शामिल होने वालों में एक बड़ी संख्या ऐसी थी जो एक हज़ार से अढ़ाई हज़ार मील तक का सफ़र तै करके आई थी। नमाज़-ए-जुमा में शामिल होने वालों की संख्या दो हज़ार से अधिक थी।

अमरीका के इलावा बर्तानिया, जर्मनी, स्वीडन, ब्राज़ील, गयाना, सरेनाम, पाकिस्तान, कबाबीर, कैनेडा से जमाअती नुमाइंदगान और दूसरे अहबाब इस मस्जिद के उद्घाटन में शमूलियत के लिए पहुंचे थे।

प्रोग्राम के मताबिक 1 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ लाए और ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया। (इस ख़ुतबा जुमा का ख़ुलासा अख़बार बदर 6 अक्तूबर 2022 ई. अंक नंबर 40 में प्रकाशित हो चुका है और उसका मुकम्मल मतन इसी शुमारा में मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा 1 बजकर 50 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें और विचार

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 32 फ़ैमिलीज़ के 156 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का शरफ़ पाया। इन सभी फ़ैमिली ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने अज़राह शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थीओं को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाएं।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ zion की स्थानीय जमातों के इलावा निम्नलिखित आठ जमाअतों और मुक़ामात से आई थीं।

chicago
st. louis
detroit
oshk osh
milwaukee
miami
los angeles
bay point

शामिल हैं। miami से आने वाली फ़ैमिली 1404 मील, लास अंजलिज़ से आने वाली 2046 मील और bay point से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2142 मील का सफ़र तै कर के पहुंची थीं।

आज अक्सर अहबाब मर्द और महिलाओं की हुज़ूर अनवर के साथ पहली मुलाक़ात थी। उनके चेहरों पर एक ग़ैरमामूली ख़ुशी थी। प्रत्येक की अपनी अपनी भावनाएं थीं। मुलाक़ात कर के बाहर निकलते तो एक दूसरे को ख़ुशी के आँसूओं के साथ मुबारकबाद देते। अल्लाह तआला उन के लिए यह ख़ुशियां दाइमी बना दे और ये उन अत्यधिक मुबारक लमहात की हमेशा के लिए हिफ़ाज़त करने वाले हों।

* मुलाक़ात करने वालों में एक दोस्त शब्बीर अहमद साहिब शिकागो से आए थे कहने लगे कि आज हम किस क़दर ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें हुज़ूर से मिलने का अवसर मिला है। प्रत्येक इन्सान को यह अवसर नसीब नहीं होता। हमें ये नेअमत और सआदत पाकिस्तान में अल्लाह की ख़ातिर ज़ुलम-ओ-सितम का सामना करने के बाद मिली है।

* एक दोस्त अदील अहमद साहिब डेट्रॉइट से आए थे कहने लगे मैं आज बहुत ख़ुश हूँ और ख़ुशनसीब भी हूँ कि मेरे बच्चों की ख़ुदा के चुने हुए ख़लीफ़ा से मुलाक़ात हुई।

* अंसर हसन साहिब लास से 2046 मील का सफ़र तै कर के मुलाक़ात के लिए आए थे। मुलाक़ात के बाद उन्होंने बताया कि साल 2013 ई. में, मैंने एक ख़ाब देखा था कि मैं हुज़ूर अनवर से एक साहिली इलाक़े के क़रीब मिल रहा था। मैंने यह ख़ाब उस वक़्त देखा था जब मैं पाकिस्तान में था और मेरे अमरीका आने का कोई संभावना भी नहीं थी। लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे अमरीका तक पहुंचा दिया और अब एक साहिली इलाक़े के क़रीब ही मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई है। यह अल्लाह तआला का मुझ पर ऐसा फ़ज़ल है कि मैं जितना भी शुक्र अदा करूँ कम है।

* जमात शिकागो से मुलाक़ात के लिए आने वाले दोस्त वक़्क़ास अहमद साहिब ने बताया कि मेरी ख़ुशी की उस समय सीमा न रही कि जब मैं दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो हुज़ूर अनवर को मालूम था कि मेरे माता कौन हैं। मैं हैरान रह गया क्योंकि यह

मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाक़ात थी।

* उसमान ज़िया जमाअत St. louis से आए थे। मुलाक़ात के बाद कहने लगे कि मैंने अपनी आँखों से देखा है कि हुज़ूर अनवर के बाबरकत वजूद में जलाल है। मैंने नूर ही देखा है।

* सलमान अहमद साहिब जो जमाअत शिकागो से आए थे कहने लगे कि मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं कुछ वर्णन कर सकूँ। बस यही कहता हूँ कि अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल है कि मैंने मुलाक़ात की सआदत पाई है और मैंने हुज़ूर अनवर से दुआएं हासिल कीं। हुज़ूर अनवर ने हमें बहुत दुआएं दी।

मुलाक़ातों का याः प्रोग्राम आठ बज कर बीस मिनट तक जारी रहा। इसके बाद 8:30 बजे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

1 अक्तूबर 2022 ई शनिवार का दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बज कर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई। यहां अमरीका के इस यात्रा के दौरान दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों से रोज़ाना बज़रीया Fax और ई मेल के ज़रीया ख़ुतूत और रिपोर्टस मौसूल होती हैं। यहां अमरीका के अहबाब की तरफ़ से ख़ुतूत और मुख़्तलिफ़ शोबा जात की रिपोर्टस भी हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश होती हैं। हुज़ूर अनवर इन ख़ुतूत और रिपोर्टस को मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात से नवाज़ते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 1 बजकर 30 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

एक लेखक महिला को इंटरव्यू

प्रोग्राम के मुताबिक़ पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां "lake county newssun" अख़बार की एक लेखिका महिला yadira sanchez olson साहिबा हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू के लिए आई हुई थीं।

इस लेखिका ने पहला सवाल यह किया कि इस दौर में जब प्रत्येक तरफ़ बहुत ज़्यादा ख़ौफ़, जरायम, बे-घर होना और ख़ुराक की कमी और अदम तहफ़्फ़ुज़ है तो आपका क्या पैग़ाम है ताकि ख़ौफ़ कम हो? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : बानी सिलसिला अहमदिया ने फ़रमाया है कि मेरे आने का उद्देश्य लोगों को उनके ख़ालिक़ के क़रीब करना है। उनके पैदा करने वाले तक पहुंचाना है और दूसरा यह कि दुनिया के लोगों को समझाना है कि वह आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करें। अगर आप लोगों को उनके हुक़ूक़ देते हैं तो फिर कोई जुर्म या बे-घर होना या ख़ुराक का अदम तहफ़्फ़ुज़ नहीं होना चाहिए।

सहाफ़ी ने सवाल किया कि आप नौजवानों को अपने ईमान पर क़ायम रहने के लिए क्या पैग़ाम देना चाहते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : नौजवानों को अपने बुज़ुर्गों की दीन और ईमान की बातें सुननी चाहिए और उनसे दीन और ईमान की बारीकियां सीखनी चाहिए। बच्चे के लिए माता पिता से सब कुछ सीखना एक फ़ित्री अमल है। माता पिता से दीन भी सीखना चाहिए।

सहाफ़ी के इस सवाल के जवाब में कि "क्या आपके ख़्याल में समस्त मज़ाहिब और लोगों के लिए अमन के हुसूल का कोई फ़ार्मूला है? क्या समस्त मज़ाहिब मिलकर अमन के लिए काम कर सकते हैं? "हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर दुनिया यह समझ ले कि समस्त लोगों को अल्लाह तआला ने ही पैदा किया है और हमारी पैदाइश का उद्देश्य एक दूसरे को मारना या तबाह करना नहीं है और यह कि समस्त मज़ाहिब अल्लाह तआला की तरफ़ से आए हैं तो फिर आप ये भी समझ लेंगी कि समस्त अंबिया और समस्त मज़ाहिब के संस्थापक ने भविष्यवाणी की थी कि आख़िरी ज़माना में एक नबी आएगा जो समस्त मज़ाहिब को मुत्तहिद कर देगा। हमारा विश्वास है कि वह शख़्स जिसके बारे में समस्त मज़ाहिब की संस्थापकों ने भविष्यवाणी की है वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी की कि मेरे पैरोकार इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को भूल जाऐंगे फिर उस वक़्त एक मुस्लेह आएगा जो मेरी उम्मत में से होगा और हमारा यक़ीन है कि ये मुस्लेह सिलसिला अहमदिया के संस्थापक हैं।

एक प्रोफ़ैसर की हुज़ूर से मुलाक़ात

इसके बाद डाक्टर craig consodine ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। मौसूफ़ हेवसटन में rice यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं।

हुज़ूर अनवर ने मौजूदा जंगी हालात का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यह इन्सानियत की तबाही की तरफ़ जा रहे हैं। बाअज़ मग़रिबी लीडर्ज़ अपने इक़दाम में इस हद तक आगे जा चुके हैं कि पीछे हटने के लिए तैयार नहीं। अब कुछ एशियाई लीडर उन्हें नरम करने और तनाज़ा को कम करने की कोशिश कर रहे हैं।

डाक्टर craig ने कहा कि मैंने एक किताब लिखी है जिसमें अहमदिया जमाअत और हुज़ूर के बारे में लिखा है। मेरी किताब का पैग़ाम मुहब्बत है। जबकि मैं एक ईसाई हूँ लेकिन मुझे अहमदिया जमाअत से लगाओ है और लगाओ की वजह मुहब्बत ही है। आपका पैग़ाम

"मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी नहीं" मेरे लिए एक ख़ास पैग़ाम है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह वह पैग़ाम है जिसे प्रत्येक भूल रहा है। दुनिया उस पैग़ाम को भूल गई है।

हुज़ूर ने फ़रमाया आप ईसाई हैं और हम मुस्लमान हैं लेकिन हम सब इन्सान तो हैं। कम से कम हमें बतौर इन्सान एक दूसरे का एहतराम करना चाहिए। अगर हमें एक दूसरे का एहतराम करने का एहसास हो जाए तो अमन मुहब्बत और हम-आहंगी होगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हमने यहां दुनिया के इस हिस्से में लफ़्ज़ आज़ादी को ग़लत समझा है। हम समझते हैं कि आज़ादी का मतलब है कि हम जो चाहें हमें कहने का हक़ है। हम जो चाहें करने में आज़ाद हैं। ज़रूरी नहीं कि हम दूसरे का सम्मान करें। यही वजह है कि अब हम बुनियादी बातों अमन, रवादारी और हम-आहंगी से हट रहे हैं।

एक डाक्टर की मुलाक़ात

इसके बाद डाक्टर क़तरीना लांटोस् (ओdr.katrina lantos) ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। वह lantos foundation for human rights and justice की सदर हैं और यह यूनाईटिड स्टेटस कमीशन इंटरनैशनल रेलेजीस फ़्रीडम की साबिक़ चेयर और नायब सदर रही हैं।

उन्हों ने कहा कि हुज़ूर से मुलाक़ात करके एक ग़ैरमामूली ख़ास अनुभव हासिल होता है। हम हुज़ूर की तरफ़ से जो नूर और हिक्मत है अपनी ज़िंदगी में अपने अंदर महसूस करते हैं और हुज़ूर की सोहबत में रह कर यह महसूस होता है कि हमारे दिन और हमारे हफ़्ते बेहतर होते जाते हैं।

डाक्टर कतरीना ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डोई के दरमयान मुबाहला का वर्णन करते हुए कहा मुबाहला की यह कहानी हैरत-अंगेज़ कहानी है कि सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ख़ुदा पर तवक्कुल करते हुए मुख़ालिफ़त और ग़लाज़त के मुक़ाबला में कामयाब हुए।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया आप ख़ुद भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कामयाबी का निशान हैं कि आप जमाअत की मदद कर रहे हैं। आप प्रत्येक जगह हमारा पैग़ाम पहुंचा रहे हैं। आप जहां भी जाती हैं दुनिया को बताती हैं कि हमारी जमाअत वह वाहिद जमाअत है जो हक़ीक़ी अर्थों में मुहब्बत की तब्लीग़ करती है और ख़ुद भी इस पर अमल पैरा है।

मौसूफ़ा ने पाकिस्तान में जमाअत के मुख़ालेफ़ाना हालात पर अफ़सोस का इज़हार किया और कहा कि अब मुआमला ज़ुलम से भी बदतर हो गया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अब मौलवी कहते हैं कि हमारी औरतों का हमल साक़ित कर दिया जाए। वह मिस्र के फ़िरऔन से भी बदतर हो चुके हैं। जैसा कि फ़िरऔन ने कहा था कि मिस्र में किसी भी नए पैदा होने वाले बच्चे को क़तल कर देना चाहिए।

उन्हों ने अर्ज़ किया कि यह हैरत-अंगेज़ बात है कि आपकी जमाअत बुराई का जवाब बुराई से नहीं देती। नफ़रत का जवाब नफ़रत से नहीं देती।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि हम इसी तर्ज़ पर जवाब तो दे सकते हैं हम ज़्यादा मुनज़्ज़म हैं लेकिन हम ऐसा नहीं करते क्योंकि हक़ीक़ी इस्लामी तालीम यह नहीं है।

चौदह सरकरदा अफ़राद की इजतेमाई मुलाक़ात

इस प्रोग्राम के मुताबिक़ निम्नलिखित 14 सरकरदा लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ इजतेमाई तौर पर मुलाक़ात की सआदत हासिल की।

शेष आगे ...

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 18 April 2024 Issue No. 16

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

परमाणु विकिरण के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए होम्योपैथिक उपचार

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
ने परमाणु विकिरण से बचने के लिए बचाव के तौर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का नियुक्त होम्योपैथिक नुस्खा निम्नलिखित ढंग से प्रोयोग करने का आदेश फ़रमया तथा फ़रमाया दुआ भी करें की अल्लाह तआला प्रत्येक को अपनी सुरक्षा में रखें। आमीन।

هوالشافی

प्रयोग का ढंग		वृद्ध लोगों के लिए	10 से 15 साल के बच्चों के लिए	10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए	गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए
पहली खुराक		Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पहली खुराक के 7 दिन बाद	दूसरी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
दूसरी खुराक के 7 दिन बाद	तीसरी खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
तीसरी खुराक के 7 दिन बाद	चौथी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
चौथी खुराक के 7 दिन बाद	पाँचवीं खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पाँचवीं खुराक के 7 दिन बाद	छठी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित
चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात
जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें , नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
01872-501130 दफ़्तर , 09682587713,09682627592
E-mail : diwan@qadian.in

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad